National Conference for Celebrating School Leadership

Presentation By:-

Rajendra Kumar Asati

Senior Lecturer (D.I.E.T.

KATNI-M.P.)

Contact Number-9424395097

हमारी यात्रा ऐसी है !

एक शिक्षक प्रशिक्षक होने के कारण मुझे अक्सर शिक्षकों के साथ रहने , उनके काम को जानने और सीखने के अवसर मिलते रहते हैं |

साथ ही इस अनुभव को बांटते हुए डी एल एड कोर्स के माध्यम से भावी शिक्षकों को तैयार करने की जिम्मेदारी भी हमारी है |

स्कूल मॉनिटरिंग के दौरान बच्चों के साथ बातचीत , उनकी प्रगति एवं शिक्षकों द्वारा कक्षा में अपनाई जा रही शिक्षण विधियों और प्रक्रियाओं का अवलोकन करने का अवसर भी मिलता है|

मूलभूत चुनौतियाँ

इस यात्रा के दौरान हर स्तर पर अलग अलग प्रकार की चुनौतियाँ मिलती हैं , जैसे

- शिक्षकों के बीच पढ़ाई लिखाई को लेकर लगभग कोई बातचीत न होना
- नेतृत्व कर्ताओं का अकादमिक रूप से तैयार एवं सुदृढ़ न होना
- सीखने सिखाने के नए / विविध तरीकों / तकनीक को अपनाने में हिचकिचाहट
- बच्चों को सिखाते समय उन्हें सोचने का पर्याप्त समय न देना
- संदर्भ पुस्तकों एवं अन्य पुस्तकों (सभी प्रकार का साहित्य) पढ़ने की इच्छा का अभाव
- सीखने हेतु अधिकांश शिक्षकों का जागरूक न होना
- सिखाने वाले समूह का स्वयं अभ्यासों में निपुण न होना / अच्छा पाठक न होना

समाधान की ओर कैसे जा रहे हम?

समाधान हेतु एक शिक्षक के रूप में खुद का अवलोकन किया तो लगा कि मै खुद भी अच्छा लर्नर और लिसनर नहीं हूँ |

जिन चीजों को करने के लिये मैं शिक्षकों को कहता हूँ , उस पर मेरा खुद का पर्याप्त अध्ययन एवं अभ्यास नहीं है जिससे उन्हें दिशा देना संभव नहीं हो रहा है |

ऐसा होने के लिये खुद को विकसित करना जरूरी है और उसके लिये बहुत जरूरी है पढ़ना , खुद के अंदर पढ़ने की संस्कृति का विकास ,

इस चुनौती से खुद पार पाने के बाद अंदर की प्रेरणा और उत्साह से माध्यप्रदेश के कटनी जिले के सभी शिक्षकों और बच्चों के साथ आगे की यात्रा अद्भुत ढंग से चल रही है --पढ़ने की यात्रा !

STATE INITIATIVE - राज्य की पहल

- FLN की प्रक्रिया को सुदृढ़ रूप से करने हेतु शिक्षक संदर्शिका / अभ्यास पुस्तिका / पाठ्य पुस्तक जुड़ाव
- राज्य एवं जिला स्तरीय शैक्षिक संवाद- सीखने सिखाने के मुद्दों पर शिक्षकों से बातचीत
- एट ग्रेड अभ्यास
- प्रश्न बैंक निर्माण
- SEAS / NAS की तैयारी हेतु लगातार प्रयास / ओलंपिआड

Developing Libraries To Appericiate Reading Culture
पढ़ने की संस्कृति के लिये पुस्तकालयों का विकास

चुनौतियाँ असल में हैं कहाँ ?

ध्यान से सोचते हैं :-

क्या हम अथवा हमारे स्कूल के बच्चे स्वयं किताबें पढ़ने में रुचि रखते हैं ?

यदि हाँ तो क्यों ?

यदि नहीं तो क्यों ?

आखिर क्या हैं वे अवरोध जो हमें अथवा हमारे बच्चों को पढ़ने से रोकते हैं ?

प्रेरणा की तस्वीर-जिला कलेक्टर अवि प्रसाद

पुस्तकालय विकास की कहानी

EACH EDUCATION STARTS WITH A QUESTION???

पुस्तकालय विकास की यात्रा स्कूल अवलोकन में उपजे सवाल पर चिंतन से शुरू हुई,

सवाल यह था कि बच्चे पुस्तकालय में किताबें पढ़ते क्यों नहीं ?

शिक्षक उन्हें किताबें पढ़ने हेतु प्रेरित करने में सक्षम क्यों नहीं लगते ?

क्या हम डाइट के माध्यम से शिक्षकों एवं छात्रों को किताबें पढ़ने हेतु प्रेरित करने की जिम्मेदारी निभा रहे हैँ ?

यदि नहीं निभा पा रहे हैँ तो कारण क्या हैँ ?

इन सवालों से हम कुछ अन्य अहं सवालों पर पहुंचे जिनने हमें आगे बढ़ने की दिशा दी,

पुस्तकालय विकास की कहानी

अहं सवाल यह था कि

क्या हम घर में अथवा पुस्तकालय में जाकर किताबें पढ़ते हैँ ?

पिछले एक वर्ष में हमने कितनी किताबें पढ़ी हैँ ?

क्या पढ़ना हमारे लिये मजेदार है ?

पढ़ना मजेदार कैसे हो सकता है ?

अगर पढ़ें तो क्या पढ़ें ,कैसे पढ़ें ? आखिर पढ़ना है क्या ?

आखिर पुस्तकालय कैसे बनाया जाये और इसमें ऐसा क्या हो सकता है कि हम शिक्षक और बच्चे इनमें घुसने
 का इंतजार करें ?

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

प्रश्नों से जिज्ञासा की ओर --

घर में बच्चों और आसपास के कुछ दोस्तों से यह जानने की कोशिश हुई कि आखिर उन्हें किताबें पढ़ना क्यों पसंद है ?

उन्हें पढ़ने से मिलता क्या है ?

बच्चों ने बताया कि जब वह सेंट्रल स्कूल में पढ़ते थे तो पुस्तकालय का नियमित पीरियड होता था, वहीं से पढ़ना शुरू हुआ, अब मजा आने लगा |

आनंदक दोस्त ने बताया कि पुस्तकें पढ़ने से उत्पन्न गहरी समझ कई मुद्दों के समाधान में मदद करती है |

अब हम पुस्तकों से जुड़ने का सोच रहे थे |

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

जुड़ाव को दिशा मिली ---

कहते हैं कि जब एक सवाल गहरा जाता है तो समाधान पास होता है,

कुछ ऐसा ही हुआ जब राज्य शिक्षा केंद्र के प्रस्ताव पर टाटा ट्रस्ट पराग ने एक काल किया और लगभग 40 मिनिट तक लायब्रेरी एजूकेशन कोर्स करने के संबंध में मेरी आवश्यकता और रुचियों के संबंध में बातचीत की |

बातचीत के बाद हमको टाटा ट्रस्ट पराग ने लायब्रेरी एजूकेशन कोर्स करने का अवसर दिया |

इस अवसर में हमें बड़े बदलाव की आहट सुनाई दी |

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

कोर्स के दौरान :---

उन मेंटर्स से मिलना हुआ जिनके जीवन में किताबें रची बसी थीं ,

एक ऐसी जगह जहां पर कुछ अच्छा बुरा या सही गलत नहीं था ,

जहां पर आपको कोई भी चित्र उकेरने की छूट थी ,

जहां पर किताबों से जुड़कर खुद को देखने का, मुद्दों को गहराई से समझकर नजरिया विकसित
करने की स्वतंत्रता थी,

जहां पर खुद करके सीखने का और धैर्य पूर्ण नेतृत्व करने का भाव भी था,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

कोर्स से मुख्य रूप से निम्न बिंदुओं पर समझ बनी :--

असल में पुस्तकालय क्या है ? पुस्तक कैसे पढ़ी जाती है ? पढ़ने की जरूरत क्यों है ?

पढ़ने में अवरोध क्या हैँ ? समाधान क्या हैँ ? चुनौतियों के बीच कैसे पढ़ना है ?

बाल साहित्य क्या है ? पुस्तकों का चयन कैसे करें ? पढ़ना और पढ़ाई में अंतर क्या है ?

पुस्तकालय गतिविधियां कौन कौन सी हैँ ? असाइनमेंट और फील्ड वर्क से प्रायोगिक अभ्यास,

गतिविधियां संपादित करने के वह कौन से तरीके हैँ जिनसे बच्चे किताबों से जुड़ते हैँ ?

चेकलिस्ट बनाकर एक बाल पुस्तकालय का विकास कैसे कर सकते हैँ ?

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

कोर्स के दौरान कुछ बातें जो दिल को छू गई :--

करुणा का भाव , हर बात को सौम्य रहकर सुनने का भाव ,

हर कहानी,कविता ,चित्र में गहराई से अंदर जाने की प्रक्रिया जिसने नया दृष्टिकोण दिया चीजों को देखने का ,

बच्चों को समझने, बच्चों के सोचने की प्रक्रिया की समझ का विकास ,

आसपास के सामुदायिक पुस्तकालयों का भ्रमण जहां पर कुछ महिलायें बहुत सीमित संसाधनों में भी बच्चों में पढ़ने की ललक विकसित करती दिखीं,

प्रत्येक व्यक्ति के विचारों का समेकन तो करना पर अंतिम रूप से कोई निष्कर्ष पर न पहुंचकर आगे खुला छोड़ना जिसने सोचने को जारी रखा,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

कोर्स के साथ भी कुछ हो रहा था :--

कोर्स के दौरान हम हर दिन सीखी गई बातों को जिले के व्हाट्सएप समूहों में साझा कर रहे थे,

इससे प्रारंभिक रूप से वह लर्निंग स्थाई होती जा रही थी और वातावरण निर्माण भी हो रहा था,

हमने इसी दौरान जिले में कक्षा एक से आठ तक के लगभग 1300 शिक्षकों को एवं सभी जन शिक्षकों, बी ए सी,एवं बी आर सी सी को समूहों में शामिल भी किया ताकि हमारी प्रेक्टिस अधिकाधिक स्कूलों तक पहुँच सके,

कोर्स के दौरान किए गये फील्ड वर्क और असाइनमेंट को भी हमने सभी से साझा किया,

इस दौरान कुछ शिक्षक भी समूहों में अपनी प्रतिक्रियाएं देने लगे थे जो उत्साहजनक था,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

कोर्स पूर्ण होने के बाद :--

मन में विचार आया कि जो सीखा उसको आगे कैसे बढ़ाएं?

डाइट प्राचार्य जी और कुछ जिला स्रोत समूह के दोस्तों से चर्चा हुई,

चर्चा से निकले बिंदुओं पर काम शुरू किया,

प्रथम चरण में हमने 51 जन शिक्षा केंद्रों के दो दो शिक्षकों का चुनाव किया,

यह चुनाव जन शिक्षकों द्वारा शिक्षकों की सहमति से किया गया,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

कोर्स पूर्ण होने के बाद :--

इन 102 व्यक्तियों के साथ हमने ऑनलाइन चर्चाओं का आयोजन किया,

गुरुबचन जी के साथ “क्यूँ क्यूँ लड़की” पर, नीतू जी के साथ पर्चे पर चर्चा में नील गैमन के लेख पर चर्चा,

नवनीत जी के साथ “पढ़ना जरूरी है”, अनिल जी के साथ “बंदरों की जल समाधि” कहानी पर चर्चा हुई,

चर्चा से निकलकर आया कि इस यात्रा में हमारे कई साथी पहले से चल रहे हैं और कई चलने को तैयार हैं,

इन चर्चाओ से आगे कार्य करने के ठोस आधार / संदर्भ / समझ विकसित हुई ,

ऑनलाइन चर्चा के छायाचित्र

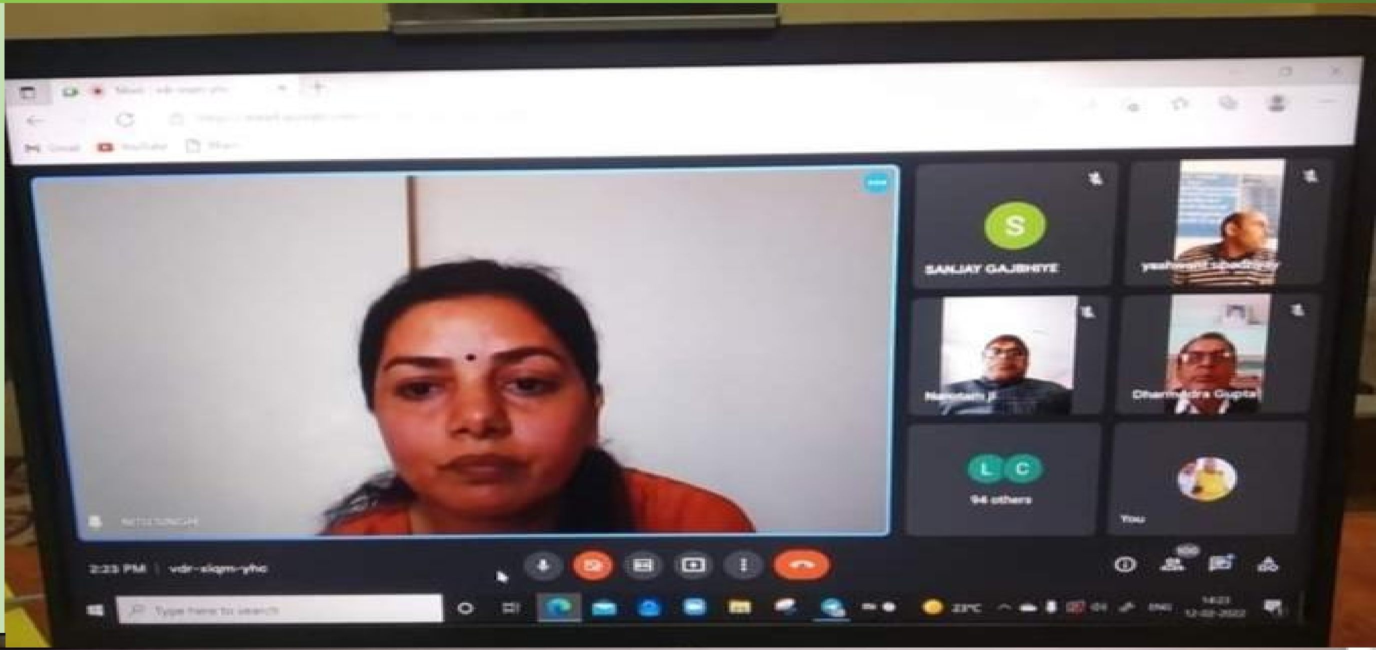

पुस्तकालय विकास की कहानी

पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

हमने कटनी जिले में सबसे पहले शेर चौक पुरवार स्कूल के प्रधान एवं शिक्षकों के साथ बैठक की,

विद्यालय का अवलोकन किया तथा मिलकर एक हाल का चयन किया,

विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं बच्चों ने मिलकर चेक लिस्ट के अनुसार व्यवस्थित पुस्तकालय निर्माण किया,

शिक्षकों और बच्चों के साथ रीड अलाउड एवं बुक टाक एवं अन्य गतिविधि की,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

शिक्षकों के साथ अन्य गतिविधियों पर भी चर्चा की,

सभी शिक्षकों को डा कृष्ण कुमार के लेख भी आपस में चर्चा करने हेतु भेजे,

इस विद्यालय की गतिविधियों को व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से अन्य विद्यालयों तक प्रेषित किया,

इस विद्यालय में पुस्तकालय स्थापना के पश्चात डी आर जी समूह के सदस्यों ने इस विद्यालय का भ्रमण किया एवं अपने विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित किए,

प्रारंभिक स्तर पर जे एस के स्तर पर चयनित दो शिक्षकों के प्रयासों से विद्यालयों में भी पुस्तकालय स्थापित होते गये,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

शनै: शनै: सभी विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित हुए,

मॉनिटरिंग अमले ने स्कूल भ्रमण के दौरान पुस्तकालय की पूछताछ भी की जिससे आंशिक शेष स्कूलों में भी पुस्तकालय बने, जन शिक्षा केंद्रों के शिक्षकों की लगातार बैठकें भी की ,

एक ओर विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित हो रहे थे वहीं दूसरी ओर कुछ विद्यालयों के दक्ष पुस्तकालय प्रभारी शिक्षकों के समूहों में नई नई गतिविधियां भेज रहे थे'

सभी पुस्तकालयों में बच्चों के लेन देन कार्ड भी बनाने से शिक्षकों को रजिस्टर में एंट्री से मुक्ति मिली जिससे वे पुस्तकालय में बच्चों को अधिक समय दे पा रहे है,

कटनी जिले के कुछ पुस्तकालयों के फ़ोटो

कटनी जिले के कुछ पुस्तकालयों के फ़ोटो

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

हमारे सामने चुनौती थी कि सभी विद्यालयों में पुस्तकालय संचालन को व्यवस्थित कैसे किया जाये ?

इसको सुनिश्चित करने के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रतीत हुई,

डाइट कटनी द्वारा 16 रिसोर्स शिक्षकों को चिन्हित कर उन्हें जिले स्तर पर प्रशिक्षित किया गया,

16 जिला स्तरीय रिसोर्स समूह द्वारा 51 जन शिक्षा केंद्र के 153 स्रोत व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

प्रत्येक जन शिक्षा केंद्र के तीन स्रोत व्यक्तियों द्वारा उनके जन शिक्षा केंद्र के अंतर्गत आने वाली 30-40 शालाओ के पुस्तकालय प्रभारियों को प्रशिक्षित किया गया,

इस प्रकार अब जिले की कक्षा 1 से 8 तक की लगभग 1800 शालाओं के पुस्तकालय प्रभारी शिक्षक प्रारंभिक रूप से एक दिवस का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैँ|

डी एल एड प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने भी इंटर्नशिप के दौरान शिक्षकों का सहयोग कर कई विद्यालयों में पुस्तकालय स्थापित किए,

जन शिक्षकों का सहयोग अत्यंत सराहनीय रहा, टाइम टेबल में रीडिंग टाइम निश्चित हुआ,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी- जिला स्तरीय प्रशिक्षण

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी-जन शिक्षा केंद्र स्तरीय प्रशिक्षण

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी-टाटा ट्रस्ट पराग-जिला भ्रमण

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

अब हम और हमारा स्त्रोत समूह पुस्तकालय प्रभारियों की क्षमता वृद्धि हेतु उनकी गतिविधियों का सतत अवलोकन कर फीडबैक दे रहा है,

इस पूरी प्रक्रिया में हमारे द्वारा पराग के यू ट्यूब में उपलब्ध वीडियो एवं अपने जिले के शिक्षकों के वीडियो तैयार कर लगातार शिक्षकों को भेजे गये,

वर्तमान में मॉनिटरिंग के दौरान स्कूलों में पुस्तकालय संचालन की स्थिति संतोषजनक है बच्चे स्कूल में किताबें पढ़ रहे हैँ,

बाल पुस्तकालय विकास की कहानी

छात्रावासों में पुस्तकालय विकास की प्रक्रिया:--

जिले में लगभग तीन माह पूर्व कलेक्टर अवि प्रसाद द्वारा स्कूलों के साथ ही छात्रावासों में पुस्तकालय विकसित किए गये हैँ|

प्रथम चरण में 14 के जी बी व्ही ,बालिका छात्रावास हॉस्टल एवं द्वितीय चरण में 12 हॉस्टल में पुस्तकालय विकसित किए गये हैँ| अब सभी कक्षा 9 से 12 के स्कूलों में भी विकसित हो गये हैँ|

पुस्तकालय गतिविधि हेतु साप्ताहिक एवं मासिक गतिविधियां निर्धारित की गई हैँ|

वार्डन एवं सहायक वार्डन को भी प्रशिक्षित किया गया है |

पुस्तकालय बन रहा जन मुहिम

कलेक्टर महोदय द्वारा छात्रावासों में पुस्तकालयों के उद्धाटन में जन प्रतिनिधियों को शामिल कराया गया एवं जन प्रतिनिधियों द्वारा बच्चों को कहानी /कविता सुनाई गई | जिले के सभी समाचार पत्रों में इसके व्यापक प्रचार प्रसार से जागरूकता का स्तर बढ़ा है |

कलेक्टर और अधिकारीगण निरीक्षण के समय स्कूलों को अक्सर किताबें उपहार दे रहे है, बाजार से भी डिक्शनरी और किताबों के अधिक बिकने के संकेत मिले हैँ | हम जिले के सभी समूहों में बच्चों के जन्मदिन या अन्य अवसरों पर उन्हें किताबें उपहार में देने हेतु प्रेरित कर रहे हैँ |

इस बार घर में किसी भी बच्चे का जन्मदिन आने पर हम बच्चों की टोली को किताबों का उपहार देने वाले हैँ |

पुस्तकालय बन रहा मुहिम-जिला कलेक्टर शिक्षकों और बच्चों के साथ

पुस्तकालय बन रहा जन मुहिम-विधायक जी पुस्तकालय के उद्घाटन में

पुस्तकालय बन रहा जन मुहिम-चित्र देखिए

पुस्तकालय बन रहा जन मुहिम-चित्र देखिए

पुस्तकालय बन रहा जन मुहिम-चित्र देखिए

पुस्तकालय बन रहा जन मुहिम-विधायक जी के साथ पालक शिक्षक अधिकारी

पुस्तकालय बन रहा उम्मीद

हम सब मिलकर पढ़ें तो :------

एक ऐसी दुनिया बन सकती है जहां हम सभी एक दूसरे को समझकर साथ चल सकते हैं|

आप सभी के प्रति आभार है गहरा ,

आपने शायद वह समय दिया है हमें

जो केवल जाता है,

लौटकर कभी नहीं आता जीवन में।

शुक्रिया, दोस्तो,फिर मिलेंगे